(विशिष्ट व्याख्यान)
ग्लिम्पसेस ऑफ इण्डियन रॉक आर्ट
13 सितम्बर, 2022

परियोजना के तहत द्वितीय कार्यक्रम भारत की शैलकला विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन 13 सितम्बर, 2022 को वसंत महिला महाविद्यालय, राजघाट में तीनों संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वाधान में किया गया। कार्यक्रम के व्याख्यानकर्ता प्रो0 सोनवणे रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्रो0 अलका सिंह (प्राचार्या, वसंत महिला कालेज, राजघाट) रहीं। आधार वक्तव्य डॉ0 रमाकर पंत द्वारा प्रस्तुत किया गया। संचालन का कार्यभार डॉ0 संवेदना सिंह (असिस्टेंट प्रोफसर, प्रा0 भा0 इ0 सं0 एवं पुरातत्त्व विभाग, वसंत महिला कालेज) द्वारा निभाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ देव वंदन से हुआ।

डॉ0 पंत ने भारतीय शैलकला का संक्षिप्त परिचय देते हुए आदि दृश्य विभाग द्वारा शैलकला पर किए जा रहे वृहद् कार्यों, जैसे– अभिलेखन, राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय सेमिनार व प्रदर्शनी, कार्यशाला तथा शैलकला पर किए गए प्रकाशन आदि, के विषय में चर्चा की। साथ ही, विश्वविद्यालय एवं विभिन्न कालेजों से आए हुए प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग के प्राध्यापकों से शैलकला विषय के अध्ययन दायरे को बढ़ाने का भी अनुरोध किया, जिससे लगभग 15–20 हजार साल प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रमाणों एवं उसके व्याख्यात्मक पक्षों को अधिकांश लोगों तक पहुँचाया जा सके।

देव वंदन प्रस्तुति

डॉ0 रमाकर पंत द्वारा आधार वक्तव्य

प्रो0 सोनवणे ने भारत की शैलकला पर विस्तृत रूप से व्याख्यात्मक परिचय दिया। शैलकला अध्ययन एवं पारिस्थितकीय तंत्र के आधार पर भारत को 6 प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है– उत्तरी क्षेत्र, पूर्वी क्षेत्र, पूर्वोत्तर क्षेत्र, मध्य क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र एवं दक्षिण क्षेत्र। प्रो0 सोनवणे ने इन सभी क्षेत्रों के शैलकला के चित्रांकन तकनीक, विषयवस्तु, प्रागैतिहासिक पर्यावरणीय स्थिति (पाटने, महाराष्ट्र से उच्चपुरापाषाणकाल कालीन शुतुरमुर्ग के अण्डों के शेल पर अलंकरण) एवं विशेषताओं आदि पर विस्तृत प्रकाश डाला। भारतीय सन्दर्भ में शैलकला के प्रमाण उच्चपुरापाषाणकाल (चंद्रावती कोर, गुजरात;

लाखाजुआर, मध्यप्रदेश) से लेकर ऐतिहासिक काल तक के हैं। साथ ही, यह बहुमूल्य धरोहर प्राकृतिक अथवा मानवीय कारकों से किस प्रकार से नष्ट हो रही है और इसे कैसे बचाया जा सकता है इसके विषय में भी बताया।

प्रो0 अलका सिंह ने अध्यक्षीय उदबोधन में आदि दृश्य विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के विभागाध्यक्ष डॉ0 पंत एवं केंद्र को इस शैलकला परियोजना के क्रियान्वयन हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही, सहयोगी संस्था डी0ए0वी0 पी0 जी0 कालेज को भी धन्यवाद किया। प्रो0 सिंह ने भविष्य में इस प्रकार के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों में यथासंभव सयोगात्मक संस्था के रूप में वसंत महिला महाविद्यालय की उपस्थिति हेतु इच्छा भी जाहिर की।

व्याख्यानकर्ता प्रो0 सोनवणे

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए डॉ0 पंत एवं प्रो0 अलका सिंह, साथ में डॉ0 सुशीला भारती

कार्यक्रम में टीम सदस्यों के अतिरिक्त विश्वविद्यालय एवं विभिन्न कालेजों के अध्यापक, शोधछात्र, विद्यार्थी आदि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 संवेदना सिंह द्वारा किया गया। अंततः डॉ0 राजीव जायसवाल (असिस्टेंट प्रोफसर, प्रा0 भा0 इ0 सं0 एवं पुरातत्त्व विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय) ने सभी आगंतुकों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ0 संवेदना सिंह व डॉ0 राजीव जायसवाल

कार्यक्रम में उपस्थित अध्यापक, शोधछात्र व विद्यार्थी